

सिंगल टाइम ज़ोन और भारत

(बीबीसी)



मानक समय टाइम ज़ोन (Time Zone) या मानक समय इसे आप क्षेत्रीय समय के नाम भी जानते हैं यह 1884 में 13 अक्टूबर के ही दिन ग्रीनविच मीन टाइम तय किया गया था और दुनिया भर की घड़ियों का समय इसी टाइम ज़ोन (Time Zone) से तय किया जाता है

आखिर इस टाइम ज़ोन (Time Zone) को निर्धारित करने की क्याय जरूरत है

क्या है टाइम ज़ोन?

18 वीं सदी से पहले दुनिया भर में सूर्य घड़ी (Sun Clock) से समय देखा और मिलाया जाता था , लेकिन सर सैंडफोर्ड फ्लेमिंग (Sir Sandford Fleming) 1884 में टाइम ज़ोन को बनाया, जिससे दुनिया भर के समय को सही दिशा मिली

- असल में जब सूर्य उदय होता है तो एक समय में पृथ्वी के किस एक ही हिस्से में रह सकता है। इस प्रकार पृथ्वी किसी हिस्से में सूर्य की तिरछी किरणें पड़ती हैं तो कहीं सीधी किरणें। इसीलिए जब किसी स्थान में दोपहर का समय होता है किसी स्थान में शाम का और किसी में रात का समय भी हो सकता है।
- अगर पूरी दुनिया की घड़ियां एक साथ मिला दी जायें तो बहुत समस्या हो जायेगी। जैसे किसी स्थान पर 5 बजे सुबह होगी तो किसी के यहां 5 बजे दोपहर तो किसी के यहां 5 शाम।
- इस समस्या को हल करने के लिए समय देशांतर रेखाओं के आधार पर क्षेत्रीय समय को बनाया गया।
- पूरी दुनिया के नक्शे को देशांतर रेखाओं (Longitude lines) के आधार पर प्रत्येक 15 अंश के अंतर पर 24 बराबर बराबर के काल्पनिक हिस्सों में बाँट दिया गया है और इसकी शुरुआत 0 अंश से होती है। यह (0 अंश वाली रेखा इंग्लैंड के ग्रीनविच में स्थित वेधशाला से शुरू होती है, समय की गणना यहीं आरंभ होती है।
- इसे अंतर्राष्ट्रीय मानक समय (ग्रीनविच) मीन टाइम के नाम से जाना जाता है। ग्रीनविच रेखा (से दाहिनी ओर वाले देशों का समय आगे होता है और ग्रीनविच रेखा से बाईं ओर वाले देशों का समय पीछे होता है।

भारत का मानक समय

इसी प्रकार हर देश का अपना मानक समय है भारत में यह रेखा जो कि इलाहाबाद के निकट नैनी से गुजरती है यही से भारत का राष्ट्रीय मानक समय माना जाता है

भारत का मानक समय ग्रीनविच रेखा से 82.5° अंश दाहिनी ओर है, जिसका अर्थ है कि भारत का मानक समय ग्रीनविच के मानक समय से साढ़े पाँच घंटे आगे है।

जब ग्रीनविच रेखा के पास रात के 12 बजेंगे तब यहां के सुबह के 5.30 बजेंगे।

महत्वपूर्ण बिंदु

- ब्रिटानी शासनकाल ने भारत को कई चीज़ें दी हैं. इनमें से एक अहम चीज़ है पूरे देश का एक ही टाइमज़ोन में होना.

- पूर्व से पश्चिम तक भारत 3,000 किलोमीटर यानी 1,864 मील तक चौड़ा है. देशान्तर रेखा पर देखें तो ये कम से कम 30 डिग्री तक के इलाके में फैला है. सूर्य को आधार बना कर होने वाली समय की गणना के अनुसार इसका मतलब है कि एक छोर से दूसरे छोर तक समय का फर्क कम से कम दो घंटे का है.
- इस फर्क का अंदाज़ा न्यू यॉर्क और यूटा के समय को देखने पर पता चलता है. अगर ये दोनों जगहें भारत में होतीं तो दोनों जगहों पर समय एक ही होता. लेकिन, भारत में इस छोटे से फर्क का असर लाखों लोगों पर पड़ा है.
- भारत के सूदूर पश्चिमी छोर के मुकाबले देश के पूर्व में सूर्योदय तकरीबन दो घंटे पहले होता है. पूरे देश के लिए एक मानक समय की आलोचना करने वालों का कहना है कि देश के पूर्वोत्तर में सूर्य की रोशनी का पूरा इस्तेमाल करने के लिए ये ज़रूरी है कि भारत में दो मानक समय को स्वीकार किया जाए. पूर्व में सूर्य की रोशनी जल्दी पड़ती है और इस कारण वहां इसका इस्तेमाल पहले शुरू हो सकता है.
- हमारे शरीर के भीतर एक घड़ी होती है जो एक नियत ताल पर चलती है, इसे सिर्काडियन रिदम कहते हैं. सूर्य का उदय होना और ढलना इस ताल को सीधे तौर पर प्रभावित करता है. जैसे-जैसे सांझ होने लगती है हमारे शरीर में नींद को प्रभावित करने वाला हॉर्मोन मेलाटोनिन बनता है, इस कारण व्यक्ति को नींद आने लगती है.

ये कैसे हो सकता है

- चूंकि पूरे भारत में एक ही मानक समय को अपनाया गया है तो देश भर के स्कूल लगभग एक ही समय पर खुलते हैं लेकिन , जिन जगहों पर सूर्य देर से अस्त होता है वहां बच्चे देर में सोने जाते हैं और इस कारण उन्हें जितनी नींद मिलनी चाहिए उससे कम नींद मिलती है.
- इंडियन टाइम सर्वे और भारतीय डेमोग्राफिक एंड हेल्थ सर्वे के अनुसार , जिन जगहों पर सूर्य देर में डूबता है वहां बच्चों को मिलने वाली शिक्षा का वक्त भी कम हो जाता है और ऐसी जगहों में बच्चों के प्राथमिक और माध्यमिक स्कूल छोड़ने की आशंका अधिक रहती है अगर सूर्य के अस्त होने के समय के अनुसार एक ज़िले की भी बात करें तो पूर्वी और पश्चिमी छोर की जगहों में बच्चों की शिक्षा की गुणवत्ता अलग-अलग पाई गई है-
- सूरज के देर में डूबने के कारण अधिकतर गरीब परिवारों के बच्चों को नींद कम मिलती है खास . कर ऐसे परिवारों में जो मुश्किल आर्थिक परेशानियों से जूझ रहे हैं
- अगर भारत एक ही मानक समय की जगह दो मानक समय की नीति अपना ले पश्चिम भारत के लिए यूटीसी +5 घंटे और पूर्वी भारत के लिए यूटीसी +6 घंटे तो भारत को सालाना तौर (पर 452 करोड़ से अधिक की मानव पूंजी यानी जीडीपी का 0.2 फीसद का लाभ मिलेगा.

कोऑर्डिनेटेड यूनिवर्सल टाइम यानी यूटीसी का अर्थ ग्रीनविच मीन टाइम से ही होता है लेकिन इसे एक एटॉमिक घड़ी की मदद से आंका जाता है और ये अधिक सही होता है.

दो मानक समय ज़ोन को अपनाने को लेकर भारत में लंबी बहस चली है. उत्तर-पूर्वी असम में चाय बागानों में काम करने वाले मज़दूर लंबे वक्त से अपनी घड़ियों में भारतीय मानक समय से एक घंटे पहले का वक्त रखते हैं. ये एक तरह से एक दूसरे मानक समय को अपनाने जैसा है.

कुछ विशेषज्ञों को लगता है कि, बीते साल आधिकारिक भारतीय टाइमकीपर्स ने खुद ही दो मानक समय ज़ोन का सुझाव दिया था एक मानक समय देश के आठ उत्तर पूर्वी राज्यों के लिए जिनमें सात बहनें - शामिल हैं और दूसरा शेष भारत के लिए इन दोनों मानक समय ज़ोन में एक घंटे का फर्क सुझाया गया . था

असम से उठी अलग टाइम ज़ोन की माँग

देश के पूर्वी और पश्चिमी छोर के समय में लगभग दो घंटे का अंतर है .ऐसे में अलग टाइम जोन होने की स्थिति में मानव श्रम के साथ अरबों यूनिट बिजली भी बचाई जा सकती है

"पश्चिम बंगाल उनकी दलील है कि अरुणाचल प्रदेश "असम सीमा से दूसरा टाइम जोन शुरू हो सकता है- लेकिन दफ्तर .में सूरज तो सुबह चार बजे ही उगता है 10 बजे खुलते हैं देश के .े पूर्वी और पश्चिमी छोर के बीच समय में दो घंटे का अंतर रहता है

केंद्रीय विज्ञान व तकनीक मंत्रालय ने इसका पता लगाने के लिए एक अध्ययन किया था कि दो अलग-उन्होंने केंद्र से इस रिपोर्ट को .अलग टाइम जोन होने की स्थिति में कितनी ऊर्जा बचाई जा सकती है सार्वजनिक करने और इसे शीघ्र लागू करने की मांग की है

फायदा नुकसान

- अगर इलाके में घड़ी की सूइयों को महज आधे घंटे पहले कर दिया जाए तो 2.7 अरब यूनिट बिजली बचाई जा सकती है.
- *केंद्रीय विज्ञान व तकनीक मंत्रालय ने कोई एक दशक पहले इस मुद्दे के अध्ययन के लिए एक समिति का गठन किया था .*
- *इनको ग्रीनविच मीन टाइम फिलहाल जीएमटी .पांच व छह घंटे आगे होना था :से क्रमश (जीएमटी) और आईएसटी के बीच साढ़े पांच घंटे का अंतर है*
- *लेकिन समिति ने अपने अध्ययन के बाद कहा कि एयरलाइंस रेडियो, टेलीविजन और समय से जुड़ी दूसरी सेवाओं को ध्यान में रखते हुए दो अलग .अलग टाइम जोन बनाना उचित नहीं होगा-*
- *दो अलगअलग टाइम जोन बनाने- की बजाय पूर्वी राज्यों में कामकाज का समय एक घंटा पहले करना इस समस्या का व्यावहारिक व प्रभावी समाधान हो सकता है यह काम प्रशासनिक निर्देशों के .जरिये हो सकता है*
- **आर्थिक असर** **नेशनल इंस्टीट्यूट आफ एडवांस** स्टडीज के अनुसार इससे रोजाना ऊर्जा की खपत 17 -18 फीसदी कम होगी और पूरे साल के दौरान 2.17 अरब किलोवाट बिजली बचाई जा सकती है. दिन में सूरज की कम रोशनी मिलने की वजह से ही अब तक इलाके में औद्योगिक विकास नहीं हो सका है. देश में मुंबई, कोलकाता, दिल्ली, बेंगलुरु और अहमदाबाद के आईएसटी के पश्चिम में होने की वजह से सूरज की रोशनी ज्यादा देर तक मिलती है.

नकारात्मक पक्ष

- देश में अब भी मैन्यूअल तरीके से ही ट्रेनों की पटरियां बदली जाती हैं अलग टाइम जोन होने .की स्थिति में भ्रामक स्थिति पैदा होगी और रेल हादसे बढ़ सकते हैं यह उनके विकसित होने

इसमें ट्रेनों के एक्सीडेंट का खतरा अधिक है क्योंकि अलग मानक समय ज़ोन में प्रवेश करते ही उनका समय बदलना ज़रूरी होगा

- एयरलाइंस, रेडियो, टेलीविजन और समय से जुड़ी दूसरी सेवाओं को ध्यान में रखते हुए दो अलग-अलग टाइम जोन बनाना उचित नहीं होगा-

भारत में संभव है दो अलग टाइम जोन

- पूर्वोत्तर राज्यों के सांसद और अन्य समूह काफी समय से एक अलग समय क्षेत्र की मांग कर रहे हैं
- देश के पूर्वोत्तर क्षेत्र में भारतीय मानक समय पर आधारित आधिकारिक (आईएसटी) कामकाजी घंटों से पहले सूर्य उगता और अस्त होता है। सर्दियों में दिन के उजाले के घंटे कम हो जाते हैं क्योंकि सूरज और भी जल्दी अस्त हो जाता है। इसका उत्पादकता और बिजली की खपत पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।
- यदि भारत को दो समय क्षेत्रों में बांट दिया जाए तो इस स्थिति में सुधार हो सकता है। एक नए वैज्ञानिक अध्ययन ने इसकी पुष्टि की है।
- आईएसटी का निर्धारण करने वाली राष्ट्रीय भौतिक प्रयोगशाला के एक नए (एनपीएल) विश्लेषण के आधार पर असम, मेघालय, नागालैंड, अरुणाचल प्रदेश, मणिपुर, मिजोरम, त्रिपुरा और अंडमान निकोबार द्वीप समूह के लिए अलग समय क्षेत्र में बांटने का (टाइम जोन) सुझाव दिया गया है।
- पूर्वोत्तर राज्यों के सांसद और अन्य समूह काफी समय से एक अलग समय क्षेत्र की मांग कर रहे हैं। असम के चाय बागानों में तो लंबे समय से 'चायबागान समय' का पालन हो रहा है, जो आईएसटी से एक घंटा आगे है।
- शोध पत्रिका करंट साइंस में प्रकाशित अध्ययन के अनुसार, भारत में दो समय क्षेत्रों की मांग पर अमल करना तकनीकी रूप से संभव है। दो भारतीय मानक समय को दो (आईएसटी) अलग हिस्सों-अलग में बांटा जा सकता है। देश के विस्तृत हिस्से के लिए आईएसटी -I और पूर्वोत्तर क्षेत्र के लिए आईएसटी-II को एक घंटे के अंतर पर अलगअलग किया जा सकता है।-
- फिलहाल भारत में 82 डिग्री 33 मिनट पूर्व से होकर गुजरने वाली देशांतर रेखा पर आधारित एक समय क्षेत्र है। नए सुझाव के अंतर्गत यह क्षेत्र आईएसटी-1 बन जाएगा, जिसमें 68 डिग्री 7 मिनट पूर्व और 89 डिग्री 52 मिनट पूर्व के बीच के क्षेत्र शामिल होंगे। इसी तरह, 89 डिग्री 52 मिनट पूर्व और 97 डिग्री 25 मिनट पूर्व के बीच के क्षेत्र को आईएसटी -2 कवर करेगा। इसमें सभी पूर्वोत्तर राज्यों के साथसाथ अंडमान और निकोबार द्वीप भी शामिल होंगे।-

- पूर्वोत्तर के लिए अलग समय क्षेत्र सुझाने के कई कारण हैं। इनमें लोगों की जैविक गतिविधियों पर सूर्योदय और सूर्यास्त के समय का प्रभाव और कार्यालय के घंटों को सूर्योदय और सूर्यास्त समय के साथ समकालिक बनाना शामिल हैं। दो समय क्षेत्रों का प्रबंधन भी किया जा सकता है।
- हमारे पास देश में दो भारतीय मानक समय प्रदान करने की क्षमता है। दो समय क्षेत्रों के होने पर भी दिन के समय के साथ मानक समय को संयोजित किया जा सकता है।